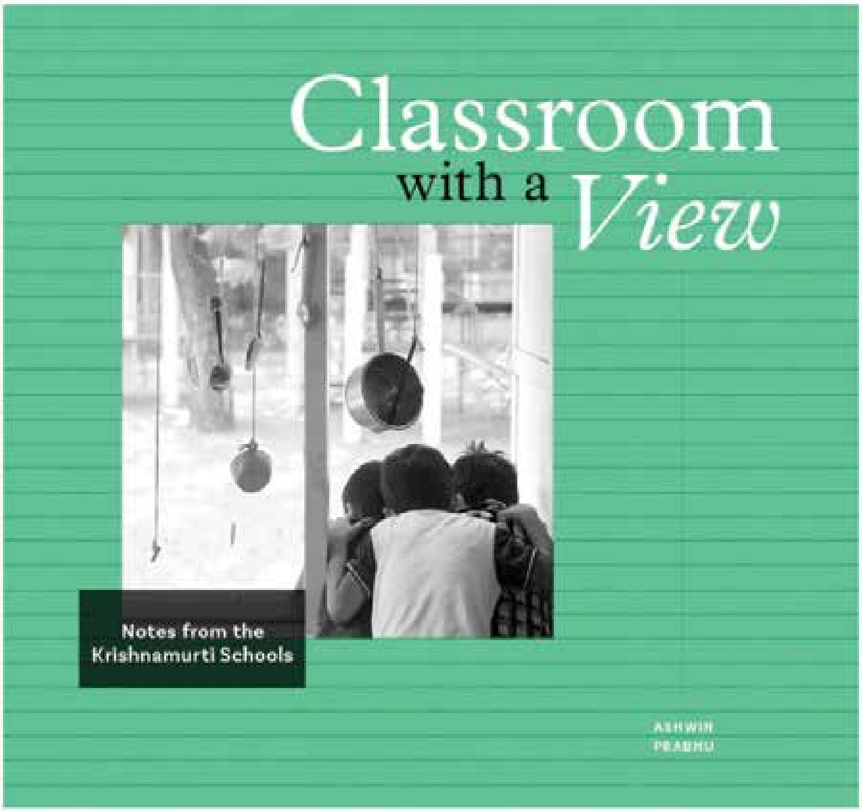
क्लासरूम विथ अ व्यू नोट्स फ्रॉम द कृष्णमूर्ति स्कूल्स | पुस्तक समीक्षा

अंकुर मदान

अश्विन प्रभु द्वारा लिखी गई *क्लासरूम विथ अ व्यू : नोट्स फ्रॉम द कृष्णमूर्ति स्कूल्स* देखने में आकर्षक किताब है। ख़ूबसूरत ढंग से डिज़ाइन की गई और परम्परागत ढर्रे से अलग लेआउट वाली इस किताब में अध्यायों के अन्त में श्वेत-श्याम तस्वीरों के साथ शिक्षा पर जे. कृष्णमूर्ति के उद्धरण दिए गए हैं। यह सब तुरन्त आपका ध्यान खींचता है और आपको इस किताब को उठाने के लिए प्रेरित करता है। सम्भव है कि इस किताब की सरल भाषा पाठकों के एक बड़े वर्ग को आकर्षित करेगी, ख़ासकर शिक्षक, पालक और स्कूल प्रशासक।

अश्विन प्रभु कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं से प्रेरित होकर और स्वयं के स्कूली शिक्षा के अनुभव पर चिन्तन करके कॉर्पोरेट कैरियर छोड़कर कृष्णमूर्ति फ़ाउंडेशन इंडिया (केएफ़आई) स्कूल में पढ़ाने के लिए आए। अश्विन यहाँ ख़ुद को सूत्रधार कहते हैं। यह किताब केएफ़आई समूह के शैक्षणिक संस्थानों को राह दिखाने वाले दर्शन और उसके अनुरूप सामने आने वाली प्रक्रियाओं को समझते-सिखाते बिताए गए उनके पाँच सालों के अनुभव का अभिवादन प्रतीत होती है।

किताब में सबसे आगे 'What is school a place for'



Title: Classroom with a View: Notes from the Krishnamurti Schools
Author: Ashwin Prabhu
Publisher: Tara (April 2022)
Language: English
Paperback: 224 pages
ISBN-13: 978-8195317356
Price: INR 800

यानी स्कूल किसलिए होता है का सवाल रखकर लेखक हमें इन प्रक्रियाओं तथा उनका मार्गदर्शन करने वाले कृष्णमूर्ति के शिक्षा-दर्शन के वर्णन की यात्रा पर ले जाते हैं। शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच के संवादों के रूप में कई क़िस्से, शिक्षकों द्वारा लिए गए अवलोकन और लेखक की टिप्पणियाँ इन वर्णनों को जीवन्त कर देते हैं।

तारा बुक्स की वी.गीता द्वारा की गई प्रकाशकीय टिप्पणी किताब में वर्णित प्रक्रियाओं के व्यापक उपयोग की वक़ालत करती है और उनके अनुसार ऐसा करने के लिए वैकल्पिक स्कूल के नेटवर्कों के साथ मिलकर कार्यशालाओं और संवादों के माध्यम से नियमित स्कूलों के शिक्षकों तक पहुँचा जाना चाहिए। वे इस आम धारणा को दूर करने की कोशिश करती हैं कि केएफ़आई स्कूल कुलीन-वैकल्पिक श्रेणी के स्कूल हैं और उनकी प्रक्रियाएँ नियमित स्कूल नहीं अपना सकते। वी. गीता की टिप्पणी में बच्चों के सीखने और उनकी शिक्षा पर कृष्णमूर्ति के व्यापक रूप से प्रशंसित विचारों को भी उजागर किया गया है, जैसे परिस्थितियाँ कुछ भी हों, सभी बच्चों के सीखने में भय, दण्ड और सत्ता के प्रभाव से मुक्ति, सबसे बुनियादी बात होती है। प्रभु भी इसी तरह का प्रयास प्रत्येक अध्याय के अन्त में करते हैं।

पहला अध्याय, जिसका शीर्षक 'Knowing Oneself' (स्वयं को जानना) है, कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन के केन्द्रीय तत्व, आत्म-जिज्ञासा, के महत्त्व पर ध्यान केन्द्रित करता है। प्रभु अस्ताचल अर्थात 'पश्चिमी पहाड़ियों में डूबते सूरज को देखने' के अभ्यास का विस्तार से उल्लेख करते हैं जिसका पालन ऋषि वैली स्कूल में किया जाता है। एक सक्रिय दिन के बाद बच्चों और शिक्षकों, दोनों के लिए शान्ति या स्थिरता की ज़रूरत इस अभ्यास की बुनियादी बात है। एक साथ मिलकर मौन का अनुभव करना वास्तव में एक सुन्दर अभ्यास है जो बच्चों को अपने भीतर ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता है। प्रभु वर्णन करते हैं कि शुरुआत में कैसे छोटे बच्चे इस अभ्यास से बचना चाहते हैं लेकिन बाद में धीरज से और निरन्तर मनाए जाने पर इस अभ्यास को महत्त्व देने लगते हैं। स्कूल की अन्य प्रक्रियाओं जैसे सर्कल टाइम और संस्कृति कक्षाओं का भी वर्णन किया गया है और बताया गया है कि ये प्रक्रियाएँ भी इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए हैं लेकिन बातचीत और संवाद के माध्यम से।

किताब का दूसरा अध्याय केएफ़आई स्कूलों में पर्यावरण (प्राकृतिक, भौतिक और सामाजिक) के अध्ययन को दिए जाने वाले महत्त्व को समर्पित है। प्रभु यहाँ 'क्षेत्र अध्ययन' की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं जो सामाजिक विज्ञान के विषयों को पढ़ाने के लिए अपनाई गई सीखने की एक कार्यविधि है। प्रस्तावित पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर समूह प्रोजेक्ट इस तरह तैयार किए जाते हैं कि वरिष्ठ विद्यार्थियों को अपने इलाक़े के एक भौगोलिक क्षेत्र का एक निश्चित समय तक अध्ययन करने का मौक़ा मिलता है। और यह अध्ययन वे बहु-विषयी दृष्टि के साथ अनुभवात्मक विधि का उपयोग करके करते हैं।

अध्ययन बनाम सीखने के द्विभाजन का उपयोग करते हुए लेखक अगले अध्याय में पहुँच जाते हैं जहाँ खोज, रचनात्मक सोच और बहुविषयी दृष्टिकोणों के माध्यम से वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने पर ज़ोर दिया गया है। इस अध्याय में 'डिज़ाइन लैब' के विचार का वर्णन किया गया और बताया गया है कि कैसे कक्षा में एक बच्चे के प्रश्न से स्कूल में इस्तेमाल के लिए साबुन बनाने के प्रोजेक्ट का रास्ता खुला। प्रभु निष्कर्ष निकालते हैं कि ऐसे प्रोजेक्ट ऐसी शिक्षा की तरफ़ ले जाते हैं जो मूर्त और अमूर्त, दोनों है। अमूर्त शिक्षा का महत्त्व इस अर्थ में है कि वह बच्चों को प्रतिस्पर्धा की भावना के बग़ैर किसी साझा लक्ष्य के लिए योगदान देने के प्रति प्रेरित करती है। शिक्षकों को लगता है कि ऐसे प्रोजेक्ट उन्हें बच्चों के व्यक्तिगत मज़बूत पक्षों और सीखने की शैलियों के लिए ज़रूरी स्थितियों को पूरा करने का मौक़ा देते हैं और उनके भीतर सहयोग व सहभागिता के मूल्यों को बैठाने का अवसर भी देते हैं। सहयोग और अनुभवात्मक अधिगम की यह भावना अगले अध्याय में भी देखने को मिलती है जहाँ लोक नृत्य और थिएटर जैसे विभिन्न कला रूपों के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को समझाया गया है और इन्हें सीखने के महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में बताया गया है।

कृष्णमूर्ति ने कहा है, "कोई अपने बारे में सिर्फ़ रिश्ते के आईने में सीख सकता है।" किताब इस विचार पर आधारित प्रक्रियाओं के उदाहरणों से भरी पड़ी है - मिलकर ख़ाना खाने को दिया जाने वाला महत्त्व, सामुदायिक कार्य में बच्चों की भागीदारी और शारीरिक श्रम (रोटा प्रणाली के माध्यम से) को गरिमा देना, जिसमें सभी बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे थालियाँ धोने और ख़ाना खाने की जगह को साफ़ रखने के कामों में भागीदारी करेंगे। ये सभी उदाहरण रिश्ते बनाने, परस्पर सम्मान और समुदाय की भावना के मूल्यों के साथ जुड़े महत्त्व की ओर इशारा करते हैं। प्रभु इन सारी प्रक्रियाओं का वर्णन बच्चों में संवेदनशीलता का विकास करने के साधन के रूप में करते हैं।

अन्तिम अध्याय व्यापक रूप से फैले भय के उस विचार की पड़ताल करता है, जो भारत के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में अलग-अलग रूपों से व्यक्त होता है। उदाहरण के रूप में लेखक पारम्परिक परीक्षा प्रणाली का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि किस तरह बच्चे परीक्षाओं की ज़रूरत से ज़्यादा बड़ी बना दी गई छवि के कारण डर और तनाव का अनुभव करते हैं और इसका उनके सीखने के अनुभवों पर क्या असर पड़ता है। केएफ़आई स्कूलों में उपलब्धि से जुड़े

तनाव और भय को कम कर दिया गया है और इसके लिए ऐसी प्रक्रियाओं को अपनाया गया है जो पुरस्कारों और दण्ड को रोकती हैं। साथ ही कक्षाओं के संगठन और पाठ्यचर्या को तैयार करने में मिश्रित आयु समूह बनाने के तरीक़े को अपनाकर स्कूल के रोज़मर्रा के माहौल को प्रतिस्पर्धा और तुलना से मुक्त रखा गया।

एक पाठक के रूप में, यह किताब मुझे कई तरह से आकर्षित करती है। मुझे स्कूल में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं के समृद्ध और सजीव वर्णन पढ़ने में बहुत मज़ा आया। इन्हें उदाहरणों व बच्चों और शिक्षकों के बीच के संवादों के साथ पेश किया गया है। किताब में वर्णित लगभग सभी प्रक्रियाएँ छोटे बच्चों की शिक्षा के बारे में मेरी अपनी मान्यताओं से मेल खाती थीं। इस तरह, पहली नज़र में तो यह किताब शिक्षा के एक दर्शन के अभ्यास में रूपान्तरित होने की प्रक्रियाओं के एक विस्तृत संकलन होने के उद्देश्य को प्राप्त करती है।

लेकिन एक शिक्षक के रूप में, जब इस किताब को पढ़ती हूँ तो मुझे कमियाँ दिखाई देती हैं। किताब में शैक्षणिक प्रक्रियायों का वर्णन कुछ हद तक अस्पष्ट है। इन्हें कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन से निकली व्याख्याओं के रूप में समझाया गया है, लेकिन इनके पीछे के तर्क को समझाने का प्रयास आधा-अधूरा-सा लगता है, ख़ासकर ऐसे पाठक के लिए जिसके पास शायद उस शैक्षिक दर्शन की गहरी समझ न हो जिसका अनुमोदन ये प्रक्रियाएँ करती हैं। अगर इस किताब का उद्देश्य (जैसा कि लेखक और प्रकाशक ने दावा किया है) यह दिखाना है कि क्यों यह ज़रूरी नहीं है कि ये प्रक्रियाएँ वैकल्पिक स्कूली व्यवस्था की जागीर बनी रहें और इन्हें नियमित स्कूलों द्वारा अपनाया जा सकता है, तो किताब इस उद्देश्य को पूरा करने में नाकाम रही है।

मुझे यह भी लगता है कि लेखक शुरुआत में ही वैकल्पिक स्कूल व्यवस्था के अनुभव, उसके इतिहास और भारत के वर्तमान सन्दर्भ में उसकी प्रासंगिकता के बारे में और गहराई से बात कर सकते थे। किताब की अपील और सम्भावना हम मुख्यधारा के अधिकांश लोगों को यह विश्वास दिलाने की क्षमता में है कि हम नियमित स्कूल प्रणाली में इन प्रक्रियाओं को अपनाने की सम्भावनाओं को देख सकें। लेकिन ऐसा करने के लिए पहले वैकल्पिक स्कूली व्यवस्था के इर्द-गिर्द मौजूद रहस्यात्मकता को हटाने और उस सन्दर्भ को स्थापित करने की ज़रूरत है जिनमें ये प्रक्रियाएँ अपनाई गई हैं। मीनाक्षी थापन की *लाइफ ऐट स्कूल – ऐन एथनोग्राफ़िक स्टडी*, इस अर्थ में एक बेहतर आदर्श है, जो आन्ध्र प्रदेश के ऋषि वैली स्कूल के शिक्षकों व विद्यार्थियों के नज़रिए से कृष्णमूर्ति के दर्शन की एक गहरी, व्यक्तिपरक व्याख्या है।

एक पाठक के रूप में, मुझे केएफ़आई स्कूल के शिक्षक की छवि बना पाने में काफ़ी संघर्ष करना पड़ा। अगर हम इस बात को ध्यान में रखें कि वह किताब में वर्णित प्रक्रियाओं को क्रियान्वित करने में केन्द्रीय भूमिका निभाता है, तो कहना पड़ेगा कि उसके बारे में किताब में बहुत कम कहा गया है। कौन है यह व्यक्ति? इन शैक्षणिक आदर्शों को अपनाते और आत्मसात करते हुए कोई शिक्षक किस यात्रा से गुज़रता है? उसे किस तरह के संघर्षों, चुनौतियों और शंकाओं का सामना करना पड़ता है और आगे बढ़ते हुए वह उनसे किस तरह पार पाता है? इस सफ़र के दौरान उसके सीखने और विकास में मदद व सहयोग देने में संस्था क्या भूमिका निभाती है? काश कि किताब में एक अध्याय इन सवालों के जवाब देने के लिए होता। मेरे लिए इस किताब में केएफ़आई का शिक्षक लगभग एक आदर्श के रूप में सामने आता है, एक परिपूर्ण, पूरी तरह से तैयार अतिमानव जिसे लगभग हमेशा यह पता होता है कि उसे क्या करना है और उन कठिन सवालों से कैसे निपटना है जो बच्चे स्कूल में रोज़ पूछते हैं।

इसी क्रम में यह किताब स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को एक जैसी सोच वालों और स्कूली प्रक्रियाओं द्वारा वांछित मूल्यों व सीखों को आत्मसात करने की एक जैसी क्षमता रखने वालों की तरह प्रस्तुत करती है। लेखक ने कुछ क़िस्सों का ज़िक्र किया है जब बच्चों ने इन प्रक्रियाओं पर सवाल उठाए हैं और यह भी बताया है कि किस तरह शिक्षक उनकी चिन्ताओं को दूर करने के लिए निरन्तर संवाद और तर्क का उपयोग करते हैं। पर क्या ऐसी कोई घटनाएँ नहीं हुई हैं जब किसी परिपक्व किशोर ने किसी प्रक्रिया का विरोध किया हो या उस पर सवाल उठाए हों या पालकों ने स्कूल की नीतियों पर असहमति जताई हो?

काश यह किताब हमें रोज़-ब-रोज़ इन शैक्षणिक आदर्शों को धरातल पर उतारने में सामने आने वाली चुनौतियों और असफलताओं की भी कुछ झलक देती। और यह बताती कि इनके चलते किस प्रकार इन प्रक्रियाओं में भी बीते सालों में कुछ संशोधन हुआ या उनकी पुनर्व्याख्या हुई। बेहतरीन प्रक्रियाओं को क़रीब-क़रीब सिर्फ़ सफलता की कहानियों के रूप में प्रस्तुत करने का यह एकरंगी नज़रिया इस तरह की प्रकृति वाली किताब की अकादमिक सम्भावना के साथ न्याय नहीं करता। इन प्रक्रियाओं के प्रति एक ज़्यादा गहरा, आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण शिक्षकों को इस किताब का सार्थक ढंग से उपयोग करने में मदद कर सकता था। यह किताब उनके लिए उनके अपने परिवेशों में इन विचारों के सम्भावित उपयोग के आकलन का साधन बन सकती थी।

अन्त में, मुझे लगता है कि यह किताब उन प्रक्रियाओं का पर्याप्त विस्तार से वर्णन करती है जो मूलतः जे. कृष्णमूर्ति के बेहद गहरी समझ देने वाले शिक्षा-दर्शन से निकली हैं और यह दर्शन देश की स्कूली शिक्षा के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण के साथ मेल खाता है। भारत के स्कूल, चाहे उनकी सम्बद्धता और सन्दर्भ कुछ भी हो, इस शैक्षणिक दर्शन और किताब में वर्णित मूल्यों व प्रक्रियाओं में हुए इसके रूपान्तरण के बारे में जानने से बहुत लाभ उठा सकते हैं।

स्कूल को हमें एक ऐसी जगह बना पाना चाहिए जहाँ बच्चे इस भय के बिना आएँ कि उनके बारे में क्या राय बनाई जाएगी या उन्हें तुलनाएँ झेलनी पड़ेंगी, जहाँ सौन्दर्य की समझ व सराहना करने वाले मूल्य विकसित किए जाएँ। बच्चों को अपने समुदाय के प्रति संवेदनशील बनाया जाए और वास्तविक दुनिया की समस्याओं का उपयोग विज्ञान और सामाजिक विज्ञान पढ़ाने में किया जाए। यह सब उन शैक्षणिक छलाँगों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं जो देश में शैक्षणिक सुधार करने के लिए हमें लगानी पड़ेंगी। हालाँकि यह किताब इस बात को अच्छे ढंग से सामने रखती है। लेकिन शिक्षकों व स्कूल प्रमुखों को इन प्रक्रियाओं को अपनाने से पहले इनके पीछे के बुनियादी विचारों तथा उनके सामने आ सकने वाली कठिनाइयों व चुनौतियों के बारे में एक गहरी समझ ज़रूर विकसित करनी चाहिए। इनके क्रियान्वयन के लिए शिक्षक, माता-पिता, बच्चे और समुदाय - सभी हितधारकों की तैयारी और तत्परता आवश्यक है और उतना ही आवश्यक है उपलब्ध संसाधनों का उचित आकलन। लेकिन मैं यह भी कहना चाहूँगी कि शैक्षणिक सुधारों को निरन्तरता में देखना, एक ऐसी यात्रा के रूप में देखना जिसके यात्री हम भी बन सकते हैं, बहुत ज़रूरी है और इसकी शुरुआत करने के लिए कभी कोई आदर्श समय या तैयारी का उपयुक्त स्तर नहीं हो सकता।



अंकुर मदान अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में पढ़ाती हैं। वे बाल-विकास और समावेशी शिक्षा में शिक्षण और शोध कार्य करती हैं। उनसे ankur.madan@apu.edu.inn पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अन्जू दास मानिकपुरी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय